अलका सरावगी के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड के मानवविद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध- प्रबंध की रूपरेखा

शोधकर्ता

प्रा. देवकांत फुलचंद गुरव

एम.ए.(हिंदी) एम.एड., सेट (शिक्षणशास्त्र)

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ. हणमंत पवार

एम.ए.(हिंदी),बी.एड्., पीएच.डी., सेट (हिंदी)

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

शहिद भगतसिंग महाविद्यालय, किल्लारी

जून २०१७

प्रस्तावना :-

पाठशाला समाज का प्रतिरूप होता है, उसी प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है, साहित्यकार अर्थात् लेखक या कवि अपने साहित्य के माध्यम से लोगों के सामाजिक जीवन का यथार्थ और वास्तविक रूप प्रस्तुत करने का प्रयास करते है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी कहते है कि "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।" ऐसे साहित्य में मानव कल्याण की भावना निहित होती है। और हिंदी साहित्य इसका प्रमाण है।

आधुनिक हिंदी भाषा साहित्य के गद्य साहित्य ने मानवी जीवन को विविध मुखी बनाया है। जिसमें 'उपन्यास' और 'कहानी' विधा महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह विधाएँ गद्य का नव-विकसित रूप माना जाता है, जिसमे कथा-वस्तु, चरित्र- चित्रण, संवाद आदि के तत्वों के माध्यम से यथार्थ और कल्पना मिश्रित कहानी आकर्षक शैली में प्रस्तुत की जाती है। इसमें मनुष्य के जीवन का यथार्थ चित्रण होता है। हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में समाज जीवन, व्यक्ति जीवन, साथ ही नारी और उनकी भावनाओं को उनकी संवेदनाओं को कथा- साहित्य में प्रस्तुत कर उनमें चेतना निर्माण करने का प्रयास किया है। इसलिए साहित्यकार किसी न किसी रूप में मनुष्य जीवन में घटित घटनाओं, विडंबनाओ और उनकी समस्याओं का चित्रण अपने साहित्य में करता है। जिसमें २१ वीं सदी की आधुनिक महिला साहित्यकार अलका सरावगी उभरकर आयी है।

'अकला सरावगी ने अपने कथा साहित्य में तत्कालीन समाज का यथायोग्य चित्रण कर बड़ी सजगता के साथ मानव जीवन की पीड़ा, नारी जीवन का यथार्थ चित्रण, मन की वेदना, घुटन, जीवन की त्रासदी, नारी शोषण, पीडित नारी की संवेदनाओं के माध्यम से स्त्री विमर्श को बडी सशक्तता के साथ, तथा यथार्थता के आधारपर प्रस्तुत किया है। अलका सरावगी चरित्रों और देशकाल को प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करनेवाली कथाकार है। उनके उपन्यास स्त्री अस्मिता के नये प्रश्न हमारे सामने रखते है।'

वर्तमान दौर में स्त्री चेतना से जुड़ी स्त्री मुक्ति और अस्मिता के संकट व पहचान के संघर्ष को व्यक्त करनेवाली अनेक कथा साहित्य लेखिकाएँ है, जिसमें अलका सरावगी और उनका कथा साहित्य इसमें प्रमुख है।

विषय चयन की पृष्ठभूमि :-

भारतीय साहित्य में एक महत्वपुर्ण बदलाव नारी विमर्श के कारण आया। जिसके कारण नारी ने साहित्य के केंद्र बिंदू से होकर मुख्यधारा में अपनी जगह बनायी है। इससे हिंदी कथा-साहित्य सर्वाधिक प्रभावित हुआ। वर्तमान दौर में स्त्री चेतना से जुड़ी स्त्री मुक्ति और अस्मिता के संकट व पहचान के संघर्ष को व्यक्त करने वाली आधुनिक साहित्यकार अलका सरावगी ने अपने उपन्यासो 'कलिकथा-वाया बाइपास' (१९९८), 'शेष कादम्बरी' (२००१), 'कोई बात नही' (२००४), 'एक ब्रेक के बाद, (२०१०), 'कहानी की तलाश में' (१९९६), 'दुसरी कहानी' (२०००), इन कहानी संग्रह में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं और नितान्त बदली हुई तस्वीर को सामने रखा है। उनके उपन्यास स्त्री अस्मिता के प्रश्न सामने रखते है। अलका सरावगी के उपन्यास पाठक को बाहर की दुनिया में सीधे नहीं ले जाते बल्कि कथा की अपनी दुनिया कि ओर खींचते है। इन उपन्यासों की अंतर्वस्तु इसप्रकार नियोजित है कि वह अपनी इन उपन्यासों की विशेषता (सत्यता, वैधता, रोचकता आदि) के लिए ययार्थ के सदृश्य पर निर्भर नहीं है। कथा की संरचना ही उसकी अंतर्वस्तु है, यह संरचना ही पाठकों को लगातार अपनी ओर खींचे रहती है। और वह कथा स्थापत्य में ही खो जाता है।

इसी जिज्ञासा के कारण मैनें उनका कथा साहित्य पढा और इसी उत्सुकतावश उनके कथा साहित्य पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा मेरे मन में निर्माण हुई। इस जिज्ञासा को लेकर मैनें आदरणीय गुरूवर्य डॉ. हणमंत पवार सर से उपर्युक्त विषय के बारे में विचार विमर्श किया। उन्होंने आवश्यक बदलावों एवं सूचनाओं के साथ इस विषय पर अनुसंधान करने की अनुमति दी। अतः मैने 'अलका सरावगी के साथ कथा-साहित्य में स्त्री विमार्श' इस विषय का शोध अध्ययन के लिए चयन किया।

उद्देश्य एवं महत्व :-

कोई भी कार्य बिना किसी उद्देश से नहीं किया जाता। हर कार्य करने के पीछे कुछ न कुछ उद्देश होता है. मेरा शोधकार्य 'अलका सरावगी के कथा-साहित्य में स्त्री विमर्श' इस विषय पर होने जा रहा है और यह भी शोधकार्य सोद्दोश ही है। 'अलका सरावगी का कथा साहित्य जीवन से जुडा साहित्य है। जीवन की वास्तविक घटनाओं एवं समस्याओं का चित्रण उनके कथा साहित्य में देखने को मिलता है। वह अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। आज के समाज में स्त्री की स्थिती को दर्शाया है। अपने साहित्य द्वारा स्त्री विमर्श को दिखाने का प्रयास किया है। स्त्री की प्रचलित एवं प्रचारित छवि को उन्होंने तोडने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से पुरूषों के द्वारा स्त्री पर किये गये शोषण के साथ स्त्री जीवन के अन्य पक्षो पर भी सोचने के लिए मजबूर करती है। जिससें उनके उपन्यास स्त्री जीवन की समस्याओं को चित्रित करनेवाले महत्वपूर्ण दस्तावेज बन जाते है।

इसीलिए उनके कथा साहित्य में व्यक्त स्त्री विमर्श का अध्ययन मेरे इस शोधकार्य का प्रमुख उद्देश है।

अलका सरावगी आधुनिक महिला साहित्यकार के रूप में प्रसिध्द है। स्त्री मुक्ति से जुड़े विविध पहलुओं को हमारे सामने व्यक्त करने का प्रयास किया है। स्त्री की प्रचलित छवि को दूर कर स्त्री को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर आझाद जिंदगी जीने के लिए प्रेरित करने का काम अपनी लेखनी के माध्यम से किया है। स्त्री जीवन की समस्याओं का चित्रण तथा वर्तमान जीवन की ज्वलंत समस्याओं का चित्रण कर उलझे हुए स्त्री जीवन को सुलाझाने का प्रयास अलका सरावगी ने किया है। इस दृष्टि से उनके कथा साहित्य का विशिष्ट महत्व है। हिंदी कथा साहित्य में उनके महत्व को प्रतिपादित करना भी इस कार्य का उद्देश होगा।

इन सारी बातों को सामने रखकर ही मै प्रस्तुत विषय के आलोक में पीएच.डी की उपाधि हेतु शोध-कार्य करूँगा।

शोध / अनुसंधान कार्य की पध्दतियाँ :-

कोई भी कार्य विशिष्ट पध्दति से ही किया जाना चाहिए। विशिष्ट एवं निश्चित पध्दति से किया हुआ कार्य सफल हो जाता है। अनुसंधान का कार्य करते समय अनुसंधान की विभिन्न पध्दतियों का अवलंब करना चाहिए। मेरे शोध विषय 'अलका सरावगी के कथा-साहित्य में स्त्री विमर्श' के लिए अनुसंधान की विभिन्न पध्दतियों का प्रयोग किया जाएगा। जैसे- आलोचनात्मक अनुसंधान पध्दति, विश्लेषणात्मक अनुसंधान पध्दति, विवेचनात्मक अनुसंधान पध्दति, व्याख्यात्मक अनुसंधान पध्दति आदि पध्दतियों का प्रयोग कर अध्ययन किया जाएगा। इसके बावजूद इस शोधकार्य के लिए विषय से संबंधित मूलग्रंथ, आधार ग्रंथ, विविध संदर्भ, कोश, विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ आदि का भी उपयोग किया जाएगा। हो सके तो लेखिका अलका सरावगीजी का साक्षात्कार भी लिया जायेगा।

प्राक्कल्पना / पूर्वानुमान :-

कोई भी व्यक्ती अपने काम की शुरूवात कुछ पूर्वानुमान या कल्पना का विचार कर ही करता है। अर्थात् किसी भी कार्य के प्रारंभ की पहली शर्त कल्पना या पूर्वानुमान है। उसे ही प्राक्कल्पना कहते है। अनुसंधान के क्षेत्र में प्राक्कल्पना को बहुत महत्व है। इससे अनुसंधान कार्य को निश्चित दिशा मिलती है। मेरे द्वारा अपने शोध कार्य के लिए निम्न प्राक्कल्पना को सामने रखकर शोध कार्य किया जाएगा-

१. अलका सरावगी ने एक आधुनिक महिला साहित्यकार के रूप में अपने कथा साहित्य में नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। और उसका यथार्थ रूप हमारे सामने रखा है।

२. अलका सरावगी एक संवेदनशील कथाकार है। उन्होने पुरूषसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति को दर्शाया है।

३. अलका सरावगी ने पुरूष सत्ताक संस्कृति में स्त्री की प्रचारित एवं प्रचलित छवि को तोडने का काम किया है।

४. अलका सरावगी ने अपने कथा साहित्य में स्त्री से जुड़े विविध पहलुओं जैसे- स्त्री स्वातंत्र्य, यातनामय जीवन, संघर्ष से घिरी नारी से जुड़े प्रश्न आदि को उभारा है।

५. अलका सरावगी के कथा साहित्य में स्त्री जीवन की वास्तविक घटनाएँ एवं समस्याएँ दिखाई देती है।

६. अलका सरावगी के कथा साहित्य में नारी जीवन से जुडी समस्याओं के साथ संघर्षशील नारी का चित्रण हुआ है।

७. अलका सरावगी ने अपने कथा साहित्य में कॉर्पोरेट दुनिया के स्त्री चरित्रों का चित्रण करके स्त्री विमर्श को नई दिशा देने का कार्य किया है।

८. अलका सरावगी अपने साहित्य के माध्यम से समाज के लोगों के सामने स्त्री का शोषण और उनके जीवन के अन्य पक्षों पर सोचने के लिए मजबूर किया है।

अध्याय निर्धारण-

१. प्रथम अध्याय- अलका सरावगी : जीवन और अभिव्यक्ति

२. द्‌वितीय अध्याय- स्त्री विमर्श : अर्थ एवं स्वरूप

३. तृतीय अध्याय- हिंदी कथा साहित्य और स्त्री विमर्श

४. चतुर्थ अध्याय- अलका सरावगी के उपन्यास में स्त्री विमर्श

५. पंचम अध्याय- अलका सरावगी के कहानी में स्त्री विमर्श

६. षष्ठम अध्याय- अलका सरावगी के साहित्य में शिल्प-विधान

निष्कर्ष एवं मूल्यांकन :-

मुल्यांकन के शोध कार्य को लेकर विभिन्न प्रश्नों की अभिव्यक्ति होगी । साथ ही इसकी उपब्धियाँ और सिमाओं का भी अंकन होगा।

प्रथम अध्याय- अलका सरावगी : जीवन और अभिव्यक्ति

इस अध्याय में अलका सरावगी के जीवन परिचय एवं साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डाला जाएगा। जिसमें जन्म, बचपन, शिक्षा, परिवार, वैवाहिक जीवन, कार्यक्षेत्र, व्यक्तित्व, साहित्यिक रूची, अभिव्यक्ति, सम्मान/ पुरस्कार, कृतित्व का संक्षिप्त परिचय आदि का अध्ययन किया जाएगा।

द्वित्तीय अध्याय- स्त्री विमर्श : अर्थ एवं स्वरूप

प्रस्तुत अध्याय में स्त्री विमर्श का अर्थ एवं स्वरूप का समावेश किया जाएगा। जिसमें विभिन्न विचारक विद्‌वानों द्वारा स्त्री विमर्श की परिभाषाओं को समाहत किया जाएगा।

तृतीय अध्याय- हिंदी कथा साहित्य और स्त्री विमर्श

प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और उसमें व्यक्त स्त्री विमर्श का अध्ययन किया जाएगा। इसमें २१ वीं सदी की आधुनिक महिला साहित्यकार जिन्होंने अपने कथा साहित्य में व्यक्त स्त्री- विमर्श में स्त्री से संबंधित किन समस्याओं को उन्होंने उठाया है। किन समस्याओं को समाज के सामने रखा है। और उसपर विचार करने के लिए मजबूर किया है। और स्त्री को समाज में सम्मान पूर्वक स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार प्राप्त हो ऐसी अपेक्षा व्यक्त की है, इस परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाएगा । स्त्री आज किस समस्याओं से गुजर रही है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, जातिभेद, वैवाहिक, शोषण, अत्याचार, धार्मिक-पाखंण्ड, रूढियों- परंपरा, कुटनीति और अत्याचार आदिका यथार्थ रूप से विवेचन कर इन आधुनिक महिला साहित्यकार ने अपने साहित्य में स्त्री विमर्श को किस रूप में प्रस्तुत किया है, इसका भी विवेचन किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय- अलका सरावगी के उपन्यास में स्त्री विमर्श

इस अध्याय में अलका सरावगी के उपन्यासों का संक्षेप में कथानक प्रस्तुत कर उनमें व्यक्त समाज में स्त्री की स्थिति, विधवा नारी की स्थिति, पुरूषसत्तात्मक समाज में स्त्री का स्थान, समाज की रूढियों में दबी स्त्री, स्त्री-जीवन की विविध समस्या स्त्री स्वातंत्र्य, शिक्षा की समस्या, पिड़ीत या शोषित स्त्री, दहेज प्रथा आदि जैसे नारी के विमर्श की अवस्था का अध्ययन किया जाएगा। उन्होने स्त्री का जीवन संघर्ष, स्त्री की समस्याओं उनकी पीड़ा आदि को समाज के सामने रखकर विचार करने के लिया लगाया है। स्त्री विमर्श की अभिव्यक्ति उन्होंने अपने उपन्यास के माध्यम से कैसे की है इसका अध्ययन किया जाएगा। जिसमें 'कलिकथा-वाया बाइपास', 'शेष कादम्बरी', 'कोई बात नहीं', 'एक ब्रेक के बाद ' आदि उपन्यास का विमर्श के बारे में अध्ययन किया जाएगा।

पंचम अध्याय- अलका सरावगी के कहानी में स्त्री विमर्श

इस अध्याय में अलका सरावगी ने अपनी कहानी साहित्य में सुंदरता और परिपूर्ण जीवन की तलाश इसका विवेचन किया है। सामाजिक समस्या को उन्होंने अपने कहानी के माध्यम से समाज के सामने रखा है। स्त्री की विवशता साथही स्त्री पुरे आत्मविश्वास के साथ, स्वतंत्र, सम्मान के साथ अपना जीवन जी सके इसिलिए उस समाज को ही बनाने की जरूरत अपने कहानी के माध्यम से अलका सरावगी ने जताई है। अपने कहानियों के माध्यम से मानवी जीवन का दृश्य जो उन्होंने हमारे सामने रखा है, उन सारी बातों का अध्ययन किया जाएगा। जिसमें उन्होने स्त्री विमर्श को व्यक्त किया है। और उसपर विचार करने के लिए प्रेरित किया है। आज समाज में स्त्री का स्थान क्या है, किन समस्याओं से गुजर रही है।

उनपर क्या बीत रही है, समाज के लोग उन्हें किस प्रकार सन्मान देते है, रुढि परंपराओं की बोझ में वह किस तरह दबी जा रही है। उनकी छबी को हमें बदलने की क्यों जरूरत है, आदि स्त्री विमर्श से जूडी सारी बातें अलका सरावगीने अपने कहानी

के माध्यम से व्यक्त किया है, उन सारी बातों का गहराई से अध्ययन किया जाएगा। जिसमे 'कहानी की तलाश में ' और 'दुसरी कहानी ' नामक कहानी संग्रह है, जिसमें कहानी का समावेश किया है।

षष्ठम अध्याय- अलका सरावगी के साहित्य में शिल्प-विधान

इस अध्याय में अलका सरावगी के कथा साहित्य की भाषा में- पात्रानुकूल भाषा, प्रतिकात्मक भाषा, अलंकारिक भाषा, चित्रात्मक भाषा, व्यंगात्मक भाषा, वातावरण, प्रधान भाषा, भावात्मक भाषा, काव्यात्मक भाषा, विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग, मूहावरे/ कहावतें आदि का अध्ययन किया जाएगा।

इसके साथ ही अलका सरावगी के कथा साहित्य की शैली में वर्तनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, संवाद शैली, चित्रात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, पूर्वदीप्ति, पत्रशैली आदि का अध्ययन किया जाएगा।

निष्कर्ष एवं मूल्यांकन :-

इसमें शोध प्रबंध के सभी अध्यायोंको निष्कर्ष रूप में प्रस्तूत किया जाएगा। अलका सरावगी के कथा साहित्य में व्यक्त स्त्री विमर्श के शोध विषय के आधारपर मूल्यांकन कर सार को प्रस्तूत किया जाएगा।

शोध-प्रबंध के अंत में- 'परिशिष्ट' में संदर्भग्रथ सूची के अंतर्गत मूल ग्रंथसूची, सहायक ग्रंथ सूची, कोश, ग्रंथ सूची, पत्र-पत्रिकाएँ आदि की सूची होगी।

शोधकर्ता

प्रा. देवकांत गुरव

एम.जी.डी.वुमेन्स,

कॉलेज ऑफ एज्युकेशन,

सोलापूर.

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. हणमंत पवार

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

शहिद भगतसिंग महाविद्यालय,

किल्लारी.